IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 3, February 2024

श्रीमद् भगवद् गीता में अन्तर्निहित तत्वों की वर्तमान शिक्षा व्यवस्था के परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता का अध्ययन

पल्लवी नागर
सहायक प्राध्यापक, अरिहंत महाविद्यालय, इंदोर

सारांष

आज समाज में जो विकट असमानता व्याप्त है, उसका मूल कारण ईष्वरीय भाव विहीन सभ्यता का सिद्वांतो में अभाव है। गीता के अस्तित्व में भगवान अर्थात वह सर्वषक्तिमान अदृष्य कारक है, जिनसे प्रत्येक जीव मात्र की उत्पत्ति होती है एवं जिनके द्वारा सबका पालन पोषण होता है। भौतिक विज्ञान ने प्रकृति के सूक्ष्म तत्व की खोज के लिए जो प्रयास किये गए है, वे ईष्वरीय अस्तित्व के बिना अपूर्ण है। वास्तविकता में जो भी अस्तित्व में है, उन सभी जीव मात्र की उत्पत्ति का एक अस्तित्व है। इस अस्तित्व की व्याख्या श्रीमद् भगवद् गीता में ज्ञानयुक्त और प्रामाणिक रुप से प्रस्तुत की गई है।

ज्ञान के क्षेत्र में श्रीमद् भगवद् गीता का सबसे महत्वपूर्ण स्थान है। क्योंकि इसमे व्यक्ति के जीवन का सार निहित हैं। गीता में ज्ञान योग, कर्म योग, भक्ति योग, राज योग, एकेष्वरवाद आदि की बहुत सुंदर ढंग चर्चा की गई है। गीता मनुष्य को कर्म का महत्व समझाती है। मनुष्य जीवन में कर्म की वास्तविक षुरूआत सर्वप्रथम छात्र जीवन अर्थात अध्ययन क्षेत्र से ही होती है। छात्र द्वारा ज्ञान प्राप्ति के लिए किया गया कर्म सम्पूर्ण जीवन का पथ निर्धारित करता हैं। छात्र जीवन के कर्म पथ पर आने वाली बाधाओं को पार करने में गीता के शैक्षिक तत्वों का समावेष षिक्षा अध्ययन में महत्वपूर्ण है, अतः प्रस्तुत लेख में श्रीमद् भगवद् गीता में अन्तर्निहित तत्वों की वर्तमान शिक्षा व्यवस्था के परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता का अध्ययन किया गया है।

मुख्य बिंदु – श्रीमद् भगवद् गीता, ज्ञान योग ,कर्म योग, भक्ति योग, एकेष्वरवाद ।

ग्रंथ संदर्भ सूची

- खेमानि माला (2013) गोस्वामी तुलसीदास रचित रामचरित मानस में अन्तर्निहित मूल्यों का विश्लेषण एवं वर्तमान शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिता का अध्ययन, पी.एच.डी. देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर।
- शर्मा दीपचन्द्र (2010) श्रीमद् भागवत महापुराण के प्रमुख संवादो में वर्णित षिक्षा के विभिन्न आयामों का विश्लेषणात्मक अध्ययन, पी.एच.डी. देवी अहिल्या विष्वविद्यालय, इन्दौर।
- मित्तल,एम.एल. (2008) उदीयमान भारतीय समाज मे षिक्षक, आगरा : अग्रवाल प्रकाषन।
- शर्मा,रा.ना.व षर्मा, रा.कु. (2006) शैक्षिक समाजषास्त्र नई दिल्ली : एटलांटिक पब्लिषर्स एण्ड डिस्टीब्यूटर्स।
- गोस्वामी तुलसीदास श्री रामचरित मानस, गीता प्रेस गोरखपुर 2005।